गॉधी जी के व्यावहारिक दर्शन और लोकतान्त्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

*डॉ. मनोज कुमार

परिचय –

काल के हृदय में जो अनुभूतियाँ एकत्र होती है, उन्हीं की अभिव्यक्ति के लिए समय, कवि, सन्त और समाज सुधारक को जन्म देता है, अर्थात् प्रत्येक महापुरुष अपने समय और परिस्थितियों का परिणाम होता है। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान गाँधी जी के आगमन को इसी सन्दर्भ में देखा जाता है। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन के साथ एक बौद्धिक संघर्ष के रूप में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत हुई थी। जिसकी कार्यप्रणाली याचना, प्रार्थना बहस और प्रतिनिधि मण्डल, तक ही सीमित थी। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में लाल, पाल और बाल के नेतृत्व में उदारवादियों की इस कार्यप्रणाली के विरोध में उग्रवादी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। इसके अलावा एक समानान्तर आन्दोलन क्रान्तिकारियों का भी था। जो इस व्यवस्था पर प्रहार करने में विश्वास करता था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस गरम और नरम दल के बीच बहस का मंच बनी हुई थी। दुसरी तरफ क्रान्तिकारियों द्वारा फेंके गए बम या कुछ अंग्रेज अधिकारियों की हत्या से उपनिवेशी शासक द्वारा दमनात्मक कार्यवाही के सिवा कुछ नहीं किया जा सका था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदारवादी और उग्रवादी दल देश को, नेतृत्व प्रदान करने में असमर्थ था। जिसके परिणाम स्वरूप इस स्थान को भरने के लिए भारतीय राजनीतिक मंच पर गांधी जी का आगमन हुआ।

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के प्रयोग को सफल करने के बाद 1914 में गांधी जी का भारत में आगमन हुआ। गांधी जी की सत्याग्रह की पद्धति सत्य और अहिंसा की पद्धति पर आधारित थी। संघर्ष की अन्य प्रचलित प्रणालियों तथा पारस्परिक तरीको से भिन्नता प्रकट करने के लिए इस नवीन पद्धति को सत्याग्रह का नाम दिया गया। सत्याग्रह में सत्य तथा अहिंसा दोनों ही शामिल है, दोनो ही एक सिक्के के दो पहलू है और साधन और साध्य के रूप में एक दूसरे के पूरक है। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा सत्य की खोज के लिए आवश्यक है क्योंकि यह हमारा ध्यान बाह्य शत्रु की अपेक्षा आन्तरिक शत्रु पर केन्द्रित करती है। अहिंसा गाँधी का आविष्कार नहीं है। अहिंसा का आदर्श भारतीय उपनिषदों और बुद्ध तथा महावीर के दर्शन में शताब्दियों पहले प्रतिपादित किया का गया था। गांधी के अनुसार अहिसां का सार शाश्वत प्रेम में समाविष्ट है। गांधी के लिए अहिंसा आस्था व निष्ठा का विषय है। इसमें सहनशीलता और निर्भीकता होती है। इसमें गोपनीयता, दुर्भावना प्रतिशोध और षडयन्त्र के लिए कोई स्थान नहीं होता है।

प्रजातान्त्रिक भारत के निर्माण में गाँधी जी की भूमिका के आकलन के लिए उनकी अहिंसा की अवधारणा को समझना आवश्यक है। जिसके आधार पर गाँधी जी ने न केवल उपनिवेशी ताकत के विरोध में देशव्यापी आन्दोलन खड़ा किया बल्कि भारतीय जनमानस में लोकतान्त्रिक संस्कारो और मूल्यों का सृजन और समावेश भी किया।

गांधी जी की अहिंसा तथा सत्याग्रह की अवधारणा इमर्सन, थोरो तथा टालस्टॉप से प्रभावित होने के बावजूद भी उसमें मौलिकता थी। गाधी जी का मानना था कि जिस प्रकार पशु जाति का कानून हिंसा पर आधारित है उसी प्रकार मानव जाति का कानून अहिंसा पर आधारित है। आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की उपलब्धियों को

अस्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि हिंसा के बीच अहिंसा की खोज करने वाले ऋषि न्यूटन से भी अधिक प्रतिभाशाली थे जिन्होने हथियारों की निरर्थकता को समझाते हुए अहिंसा के मार्ग पर चलकर मुक्ति का रास्ता दिखाया। गांधी जी भारत ही नहीं बल्कि सारे विश्व कि प्रगति, शान्ति और भविष्य के लिए अहिंसा को अनिवार्य मानते थे।

सत्याग्रह अहिंसक क्रान्ति का विज्ञान है। सत्याग्रह सत्य का का शाब्दिक अर्थ है– सत्य का आग्रह या लक्ष्य पर दृढ़ रहना गांधी जी की मान्यता है कि सत्य के प्रति आग्रह व्यक्ति को असीम शक्ति से सम्पन्न कर देता है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसमें सबके प्रति प्रेम और सबके लिए कष्ट सहने की तत्परता व्यक्ति की प्रेरणा बन जाती है। एक सत्याग्राही में जिन गुणों का होना आवश्यक माना है, वे ही गुण प्रजातन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है। इनमें सत्य, अहिंसा, संयम और धर्म–समभाव, आत्मबल, सहनशीलता, निडरता आत्मानुशासन आदि प्रमुख गुण है यदि हम अपनी आलोचना और विपक्ष की बात नही सुनते है तो लोकतन्त्र का विकास असम्भव है क्योकि इसमें संवाद और विवेक के सारे दरवाजे बन्द हो जाते है और यह तानाशाही का मार्ग भी प्रशस्त करता है । विपक्ष और विमर्श के अभाव में लोकतन्त्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

वे सच्चे लोकतन्त्रवादी के लिए आत्मानुशान अनिवार्य मानते थे क्योंकि आत्मानुशासन की अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण हुए बिना कोई भी लोकतन्त्रवादी लोकतन्त्र की सेवा नही कर सकता है। इसी सन्दर्भ में गांधी जी की अंहिसा उच्च स्तरीय लोकतान्त्रिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

गांधी जी की अहिंसा के राजनीतिक एवं व्यावहारिक निहितार्थ भी थे। वे जानते थे कि हिंसा द्वारा ब्रिटिश सत्ता से संघर्ष करके सत्ता प्राप्त करना असम्भव है तथा ब्रिटिश सत्ता का मुकाबला हिंसा से नही अहिंसा से किया जा सकता है। वास्तविकता यह थी कि हिंसक संघर्ष में आम जनता भाग नहीं लेती जबकि अहिंसक संघर्ष में समाज के सभी वर्गो की भागीदारी सम्भव थी। गाँधी जी का मानना था कि यदि देश का कोई भी वर्ग देश के लिए बलिदान से पीछे नहीं हटता तो स्वराज को पाया जा सकता है, अगर बलिदान से पीछे हटता है तो स्वराज को हासिल नहीं किया जा सकता है। उनकी इस मान्यता में लोकतन्त्र तथा साधन–साध्य की अवधारणा शामिल है।

गांधी जी के लिए केवल लक्ष्य की पवित्रता ही अनिवार्य नहीं थी बल्कि उसे प्राप्त करने के मार्ग की पवित्रता भी उतनी ही आवश्यक थी। साधन और साध्य को अलग नहीं किया जा सकता है। उनके अनुसार साधन तथा साध्य का सम्बंध बीज और पेड़ का है। जैसा बीज होगा वैसा ही पेड़ होगा। स्वराज्य के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गाँधी जी ने अहिसंक आन्दोलन को साधन या माध्यम बनाया । इस प्रकार जन प्रयासों से स्वराज्य की प्राप्ति स्वाभाविक रूप से वास्तविक लोकतन्त्र का पर्याय है। साधन तथा साध्य की पारस्परिकतों के सन्दर्भ में– स्वराज्य तथा लोकतन्त्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि लोकतन्त्र का वास्तविक मार्ग अहिंसा के विज्ञान से ही निकलता है असत्य और हिंसक साधनों से प्राप्त स्वराज्य में विपक्ष और विरोधियों का दमन उन्मूलन किया जाना स्वभाविक है। इस प्रकार के स्वराज्य में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए कोई स्थान नहीं होता। वास्तविक स्वराज्य से तात्पर्य उसमें सर्वाधिक शक्तिशाली तथा सर्वाधिक कमजोर (स्त्री और बच्चे) व्यक्ति की समान भागीदारी हो, वास्तविक लोकतत्र का यही अर्थ है।

गांधी जी दृष्टि में अहिंसा तथा प्रजातंत्र एक ही सिक्के के दो पहलू है। लेकिन गाँधी जी पश्चिमी पद्धति के उदारवादी लोकतत्रों के भी गंभीर आलोचक थे। उनके अनुसार इन लोकतन्त्रों में केन्द्रीकृत प्रतिनिधि संस्थाए, सच्चे लोकतंत्र की भावना को व्यक्त नहीं करती। इसीलिए उन्होंने बार–बार कहा कि अन्य देशों की तरह हम भी शस्त्रबल से स्वराज्य को पाने का प्रयास कर सकते है, किन्तु वह आमजन का स्वराज्य नहीं हो सकता। आधुनिक पश्चिमी लोकतन्त्र जिन व्यक्तिवादी सिद्धानों पर आधारित है, वे समता, सादगी, और शान्ति के आदर्शो के अनुरूप नहीं है। स्वराज्य कष्ट साध्य तीर्थ के समान है। जिसके लिए व्यापक संगठन, क्षमता, ग्रामीण सम्पर्क एवं सहभागिता

जन जागृति एवं जन शिक्षा अनिवार्य है ।

1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर ब्रिटिश सरकार की ओर से उन्हे "केसरे हिन्द स्वर्ण पदक'' प्रदान किया। इसी वर्ष अहमदाबाद में उन्होंने साबरमती नदी के किनारे सत्याग्रह आश्रम (बाद में साबरमती आश्रम के नाम से भी प्रसिद्ध) की स्थापना की। लेकिन उन्होंने भारत और उसकी सभ्यता को समझने के लिए देश का दौरा किया। इस भारत भ्रमण के पश्चात् वो इस निकर्ष पर पहुंचे कि अंग्रेजो के विरूद्ध ही नहीं अपितु भारतीय समाज के भीतर भी संघर्ष चलाना होगा। भारत अनेक वर्गो, जातियों और बटी हुई राजनीति के प्रति उदासीनता में चेतना का विकास गांधी जी जैसा करिश्माई व्यक्तित्व ही कर सकता है। 1917 में गांधी जी ने भारतीय मजदूरों को बंधक बनाकर श्रम करने के लिए देश से बाहर भेजने की नीति का विरोध किया। जनवरी–मार्च 1918 में गांधी जी ने अहमदाबाद के सूती कपड़ा मिलों के श्रमिकों की मांगों को लेकर उपवास किया। 1919 में रोलट विधेयको के विरोध में उन्होंने सत्याग्रह की प्रतिज्ञा की तथा 1921, 1930 तथा 1932 के अहिसंक असहयोग एवं सविनय अवज्ञा जैसे– सशक्त आन्दोलनों के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। उन्होंने इन आन्दोलनों को अन्याय के विरुद्ध नैतिक प्रतिरोध के रूप में परिभाषित किया। गॉधी जी ने अहिंसा के सिद्धांत के आधार पर राष्ट्रीय आन्दोलन को सचालित करने का निर्णय लिया और राष्ट्रीय आन्दोलनों का स्वरूप बदलते हुए उसे एक जन आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया।

गांधी जी ने इन जन आन्दोलनों के माध्यम से जन मानस में लोकतान्त्रिक मूल्यों का सृजन किया तथा कांग्रेस के स्वरूप को बदलकर उसे संस्थागत एवं प्रतिनिधि मूलक संस्था का स्वरूप दिया। उन्होंने सारे देश में कांग्रेस जिला इकाईयॉ गठित कर उन्हे संगठन और उसकी सदस्यता का आधार बनाया । कांग्रेस की कार्यसमिति को शक्तिशाली बनाया, रचनात्मक कार्य तथा सतत् सक्रियता के लिए गॉधी ने मजदूरों, हरिजनों महिलाओं, युवाओं, और आदिवासियों के मोर्चा संगठनों का गठन किया ताकि आन्दोलन को सक्रिय एवं उर्जावान बनाये रखा जा सके। गाँधी ने अनेक समाचार पत्रों जैसे यंग इण्डिया, नव जीवन, इडियन ओपिनियन, हरिजन का प्रकाशन किया ताकि जन मानस तक अपनी बातों को पहुंचा पाये।

गांधी के आन्दोलन और संघर्ष केवल भारत को ब्रिटिश सरकार से आजादी दिलाने के लिए ही नहीं थे । उनका ब्रिटिश सरकार से आजादी से तात्पर्य था स्वराज्य की प्राप्ति जो लोकतन्त्र का पूरक है। लोकतंत्र केवल शासन प्रणाली नहीं बल्कि एक जीवन शैली भी है। जिसका प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ना चाहिए। गाँधी जी भारत के लिए एक ऐसी व्यवस्था की कल्पना करते थे जिसमे धर्म, जाति, लिंग, धन क्षेत्र, वर्ग आदि के आधार किसी प्रकार का भेदभाव न हो। जिस समाज मे अपने कुछ सहधर्मियों (शूद्र) को छूना भी पाप समझा जाता हो वहां सामाजिक समानता की कल्पना नहीं की जा सकती है। उन्होने जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था तथा धूआछूत के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष किया।

गांधी जी के भारत आगमन के परिणाम स्वरूप पुनः राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ सामाजिक पुननिर्माण के प्रश्न को समान महत्व दिया गया। इसी प्रकार मानवोचित तथा शोषण रहित समाज के पुनर्निर्माण के लिए महिला स्वतन्त्रता और सशक्तिकरण को आवश्यक माना। वे जानते थे कि राष्ट्रीय आन्दोलन की जनवादी प्रकृति के अनुरूप देश की आधी आबादी महिला की भागीदारी आवश्यक है। गांधी जी सन्य तथा अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह की अपनी संघर्ष की तकनीक के लिए नैतिकबल, साहस, सहनशीलता तथा त्याग पर आधारित स्त्री स्वभाव को सर्वाधिक अनुकुल मानते थे। गांधी के दक्षिण अफ्रीका के आन्दोलनों में भी भारी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी से राष्ट्रीय आन्दोलन को ताकत मिली। इसने महिलाओं को राष्ट्रीय राजनीति एवं आन्दोलन की मुख्य धारा से जोड़ दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओ की सक्रियता तथा भागीदारी मे सफलता प्राप्त कर लेने के बाद गांधी जी ने महिलाओं के उत्थान के लिए बहुत कार्य किया। उन्होंने

उन्नीसवीं सदी के अन्य समाज सुधारकों के समान महिलाओं की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा देवदासी प्रथा का विरोध किया तथा स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। गाँधी जी ने स्त्री तथा पुरुष के लिए निर्धारित दोहरे मापदण्डो को चुनौती देकर सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना की।

गाँधी जी ने अपने आपको सनातन हिन्दू मानते हुए हिन्दू धर्म की अपनी मौलिक व्याख्या प्रस्तुत की। भारतीय सामाजिक संस्कृति के अनुरूप गॉधी जी सम्प्रदायिक भेदभाव के विरोधी थे। उनके लिए धर्म मात्र कर्मकाण्ड न होकर सम्पूर्ण जीवन का नैतिक आधार था। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदों की सर्वोच्चता के विचार को स्वीकार नहीं किया । उन्होंने वर्णाश्रम धर्म, के जातीय स्पष्टीकरण को अपने नवीन दृष्टिकोण से देखा। इसलिए धर्म परिभाषा में समाज के प्रति व्यक्ति के दायित्व नैतिकता, सदाचार तथा जीवन मात्र, का हित समाहित था। राष्ट्रप्रेम का पर्याय होने के कारण उनका धर्म राष्ट्रीयता में बाधक न होकर सहायक था। इस प्रकार गांधी की सर्वधर्म समभाव की अवधारणा एक ओर भारतीय परम्परा के अनुकूल थी तो दूसरी और आधुनिक धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र की पोषक है विभाजन के पश्चात् फैली साम्प्रदायिक हिंसा ने गांधी जी को पूरी तरह से झकझोर दिया। तथा उनकी कार्यशैली ने सिद्ध कर दिया कि गांधी वास्तविक उदारवादी धर्मनिरपेक्ष प्रजातन्त्रवादी थे। भारत विभाजन को रोकने के लिए उनका लीग को सत्ता सौपने का प्रस्ताव नोआखली में दंगा पीड़ितों के बीच साहसपूर्ण कार्य तथा आजाद भारत में दंगाइयो से मुसलमानों की उचित सुरक्षा के लिए नेहरू और पटेल सरकार के समक्ष आमरण अनशन आदि अनेक ऐसे उदाहरण है। इसी दृष्टि से भारतीय सविधान द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतन्त्रता एवं समानता के अधिकारों में गांधी जी के योगदान को देखा जा सकता है।

गाँधी ने भारत की ग्रामीण जनता में सामूहिक कार्यवाही को लोकप्रिय बनाया, और सदियों से शिकार बनी ग्रामीण जनता में निर्भीकता पैदा की। गांधी के जनवादी चित्तन में ग्राम स्वराज्य की अवधारणा का प्रमुख स्थान है। उनका मानना था कि असली भारत गाँवों मे बसता है। और गाँवों की गरीबी से मुक्ति ही वास्तविक स्वराज्य की प्राप्ति है वे आधुनिक भारत के प्रथम राजनेता थे, जिन्होंने भारत के ग्रामीण जन समुदाय को सक्रिय राजनीतिक गतिविधियों से संबंधित किया। बुराई का प्रतिकार निर्भीकता से करने का जो साहस गांधी ने दिखाया उससे अहिंसा में विश्वास न रखने वाले भी अहिंसा के समर्थक बन गए।

निष्कर्ष–

गांधी ने सत्य, ईश्वर, साधन, साध्य, धर्म, साम्प्रदायिकता स्वराज, ग्राम स्वराज, जाति, धुआछूत, औद्योगिकीकरण कुटीर उद्योग, स्त्री शिक्षा, नैतिकता आदि असंख्य विषयों पर सतत रूप से विचार व्यक्त कर विभिन्न मतों को बहस करने का सार्वजनिक मंच प्रदान किया। आधुनिक लोकतंत्र की अवधारणा पश्चिमी जगत की उपज थी और भारत में प्रतिनिधि संस्थाओं का श्रेय ब्रिटिश सरकार लेती रही। लेकिन भारतीय लोकतंत्र राष्ट्रवादी विचार विमर्श का परिणाम था। गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन की अहिसंक पद्धति और प्रयोगों ने आकार ग्रहण किया उसके केन्द्र में आमजन की पीड़ा थी। सदियो से सामन्तावाद और जातिवाद में बंटे हुए भारत को ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ जगाकर खड़ा कर दिया। इस प्रकार गांधी के अहिसंक संघर्ष से पैदा हुए राष्ट्र स्वराज के आधारों में लोकतान्त्रिक मूल्यों के दर्शन होते है।

***सहायक आचार्य**
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बस्सी, जयपुर (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1 गाँधी, एम. के : एन आटोबायोग्राफी, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद 1993 पृ 239

2 राम, रतन, गाँधी : भारत एण्ड एक्सन, कलिंग पब्लिकेशन दिल्ली 1991
3 कोठारी, रजनी : पॉलिटिक्स इन इण्डिया, आरिएन्ट लौगमेन हैदराबाद, 1970, पृ 50
4 दिनकर, रामधारी सिंह : संस्कृति के चार अध्याय, उदयाचल, पटना, 1962, पृ. 619
5 भावे, विनोबा : स्वराज शास्त्र, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली 1953
6 बेदी, हरमहेन्द्र सिंह : गांधी : दर्शन और विचार, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, 1995
7 सरकार, सुमित : महात्मा गांधी, ए. रघुराम राजू (सम्पा) डिबेटिंग गांधी, आक्सफोर्ड, 2006, पृ 240
8 गाँधी, एम. के : इथिकल रिलीजन, अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, 1968
9 गांधी, एम. के : हिन्द स्वराज, 1938, पृ 39
10 कोठरी, रजनी (सम्पा) : स्टेट एण्ड नेशन बिल्डिंग, अलाइड पब्लिशर्स, दिल्ली 1976, पृ136
11 अम्बेडकर, बी. आर : व्हाट कांग्रेस एण्ड गाँधी हेव इन टु द अनटचैबल्स, ठक्कर एण्ड कम्पनी, बाम्बे 1946
12 फिशर, लुई : द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी, जोनाथन कैंप, लन्दन 1954, पृ 352
13 दुबे, अभय कुमार : (सम्पा) लोकतन्त्र के सात अध्याय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002 पृ 27
14 गांधी, एम. के : हिन्दू धर्म, नवजीवन, 1958, पृ 26
15 गांधी, एम. के : कम्यूनल यूनिटी, नवजीवन, 1949, पृ 158–159
16 गांधी, एम.के : दि रिमुअल ऑफ अनटचैविलीटी, नवजीवन 1954
17 श्रीमन नारायण : सलेक्टेड वर्क्स ऑफ गांधी, खण्ड छः नवजीवना 1968 पृ 91
18 शंभूनाथ : सामाजिक क्रान्ति के दस्तावेज, भाग प्रथम वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004 पृ 475
19 तेन्दुलकर, डी. जी : महात्मा, खण्ड चार, नवजीवन, 1953, पृ 318
20 रूडोल्फ, लॉयड एण्ड रूडोल्फ सुसेन होबर : पोस्ट मार्डन गांधी आक्सफोर्ड, 2006 पृ 9
21 गुप्ता, दीपाशंकर : ''गांधी विफोर हैबरमास'' इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली बोल्यूम XIV-No 10 मार्च–7–13, 2009
22 गांधी, एम. के : नान वॉयलेन्स इन पीस एण्ड वॉर भाग–1, नवजीवन, 1958
23 सैयद शरीफुद्दीन पीरजादा : फाउण्डेशन्स ऑफ पाकिस्तान ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग, डॉक्यूमेन्ट खण्ड – 11 नेशनल पब्लिशिंग हाउस कराची 1969, पृ 305–306
24 शर्मा, अमित कुमार : हिन्द स्वराज्य की प्रासंगिकता, कौटिल्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005